**National Journal of Research and Innovative Practices ( NJRIP)**
**Vol-2, Issue-2, 2017**
**ISSN: 2456-1355,** http://www.edusanchar.com

# ''वर्तमान विद्यालयों में बढ़ती छात्र अनुशासनहीनता एक चिन्ता का विषय''

**मुकेश कुमार मीना**

ई–मेलः mmeena658@gmail.com

**प्रवक्ता : स्व. मूलचन्द मीना शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लालसोट(दौसा)**

**प्रस्तावना :–**अनुशासन प्रत्येक देश और समाज के जीवन के लिए सबसे अमूल्य निधि है जिस प्रकार देश और समाज के जीवन में अनुशासन का मूल्य बहुत अधिक है उसी प्रकार अनुशासन व्यक्ति के जीवन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। समाज के लिए बालक, विद्यालय में तैयार किये जाते है। इसलिए विद्यालय में भी अनुशासन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यालय में बालक को शिक्षा दी जाती है, उसके जीवन को सुदृढ़ और सुन्दर बनाया जाता है। अतः उससे यह आशा की जाती है कि वह विद्यालय के नियमों का पालन करें औश्र विद्यालय में उचित व्यवहार को अपनाये। उसके ऐसा न करने से विद्यालय का वह उद्देश्य निष्फल हो जाता है जिसकी प्राप्ति के लिए समाज द्वारा विद्यालय की स्थापना की गयी है। यही पर अनुशासन की आवश्यकता अनुभव की जाती है और विद्यालय में उसका महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

अनुशासनहीनता को समझने से पहले अनुशासन के बारे में जानना जरूरी है, अनुशासन को अंग्रेजी भाषा में डिसिप्लिन कहते है। डिसीप्लिन शब्द की उत्पत्ति डिसाइपल से हुई है जिसका अर्थ है शिष्य, हिन्दी भाषा में शिष्य शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के ''शास'' धातु से हुई है। शास का हिन्दी अर्थ है– नियमों का पालन– आज्ञा पालन एवं नियंत्रण शाब्दिक अर्थ के रूप में अनुशासन का अर्थ नियमों का पालन करते हुए आत्म नियंत्रण करने से है इस प्रकार विद्यालय के संबंध में अनुशासन का अर्थ है''अपने उपर नियन्त्रण रखते हुए विद्यालय के

नियमों का पालन करना तथा अपने व्यवहार में नैतिकता और शिष्टाचार बनाये रखना ही अनुशासन है।

अनुशासन से मतलब ''विद्यार्थी को इस योग्य बनाना है कि वह स्वयं पर नियन्त्रण रख सके और विद्यालय के नियमों का पालन वह बिना किसी डर और भय के करके विद्यालय में अच्छे वातावरण बनाने में सहयोग करें''

प्राचीन समय में छात्रों को अनुशासित करने व नियन्त्रण रखने के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी जिसके भय से छात्र गुरूकुलों में अपने आप को अनुशासित रखते थे लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल गयी और प्राचीन अवधारणा की आलोचना की जाने लगी, अनेक मनोवैज्ञानिकों ने कठोर एवं दमनात्मक अनुशासन प्रणाली का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया और तर्क दिया कि भय और आतंक की अपेक्षा प्रेम एवं स्नेह से छात्रों को अधिक अनुशासित किया जा सकता है, प्लेटों का तर्क था कि ''बालक को दण्ड की अपेक्षा खेल द्वारा नियंत्रित करना ही अच्छा'' है। विचार करे तो बात बिल्कुल सही सी लगती है कि भय और दण्ड के आधार पर थोपा गया अनुशासन अल्पकालिक और केवल कक्षा कक्ष एवंविद्यालय की चार दीवारी तक ही सीमित रह सकता है यह छात्र की आत्मा पर असर नही कर सकता लेकिन प्रेम और स्नेह से प्रदान किया गया अनुशासन सीधे छात्र की आत्मा पर असर डालता है जिसका प्रभाव स्थायी और आजीवन रहता है छात्र गुरू द्वारा प्रेम स्नेह से सिखाई गई शिष्टाचार की बातों को अपने जीवन में उतारकर उन आदर्शो पर जीवन भर चल सकता है लेकिन आज प्राचीन समय की गुरू शिष्य परम्परा के सारे आदर्श मिटते जा रहे है। दोष पूर्ण शिक्षा व्यवस्था और बढ़ती अनुशासनहीनता के कारण छात्र और अध्यापकों के बीच की दूरियाँ बढ़ती जा रही है। नैतिकता का पतन होता जा रहा है– मानवीय मूल्यों का हास होता जा रहा है इन सबका कारण एक ही कारण है वर्तमान समय में विद्यालयों में बढ़ती हुई छात्र अनुशासनहीनता।

अनुशासनहीनता की समस्या भारत में ही नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व के विद्यालयों में व्याप्त है। हम प्रतिदिन अखबारों में पढ़ते है। छात्र छोटी–2 समस्याओं पर कक्षाओं का बहिष्कार करदेते

है, प्रधानाध्यापक का घेराव करते है, हडताल करके विद्यालयों के ताला लगा देते है, तोडफोड़, उपद्रव करके विद्यालय एवं सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते है। इस प्रकार आज यह समस्या चिन्ता का विषय बनी हुई है। प्रत्येक देश में अपनी परिस्थितियों के अनुसार अनुशासनहीनता के अलग–अलग कारण जिम्मेदार हो सकते है मेरी दृष्टि में भारत के विद्यालयों में छात्र अनुशासनहीनता को बढ़ावा देने के लिए निम्न कारण उत्तरदायी हो सकते है

**दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली** :– वर्तमान शिक्षा प्रणाली जीवन की वास्तविकताओं से कोसों दूर है यह छात्रों को केवल सैद्धान्तिक ज्ञान ही प्रदान करती है अर्थात यह शिक्षा देश के नवयुवकों को रोजगार के स्थान पर केवल डिग्रियाँ प्रदान करती है। देश के नौजवान ऊँची ऊँची डिग्रियाँ लेकर रोजगार की तलाश में आवारा पशुओं की भाँति सड़कों पर घुम रहे है। कार्यालयों के चक्कर लगा रहे है जिससे उनमें असंतोष और अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है।

**दौषपूर्ण परीक्षा प्रणाली** :– वर्तमान समय में हमारे देश में विभिन्न शिक्षा बोर्डो एवं विश्वविद्यालयों के द्वारा चलाई गई परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। परीक्षा के नाम पर सत्र के अन्त में एक वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसमें भी अधिकांश विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं में केवल पाँच निबन्धात्मक प्रश्न पूँछे जाते है इस प्रकार की परीक्षा पास करने के लिए अधिकांश छात्र परीक्षा के कुछ समय पहले बाजार से सस्ते नोट्स खरीद लेते है और उन्हे पढ़कर परीक्षा पास कर लेते है। विद्यालयों, महाविद्यालयों में केवल मेहमान या पर्यटक भॉति शोक मनोरंजन के लिए जाते है सम्पूर्ण वर्ष वे आवारा मनचलों की भाँति घुमते हुए अनुशासनहीनता करते रहते है।

**शिक्षकों का गिरता नैतिक पतन** :–वर्तमान में शिक्षकों का नैतिक दृष्टि से पतन हो रहा है जिसके वे स्वयं जिम्मेदार है वे छात्रों को ट्युशन की सामग्री समझते है अतः वे कक्षाओं में विद्यार्थियों की ओर पूर्ण ध्यान न देकर केवल ट्युशन संबंधी कार्यो में व्यस्त रहते है जिसका छात्रों पर गलत प्रभाव पडता है क्योकि केवल पैसे वाले छात्र ही ट्युशन पढ़ सकते है शेष छात्र अनुशासनहीनता के कार्यो की तरफ मुड जाते है।

**शिक्षकों का पक्षपातपूर्ण रवैया** :–प्रायः यह देखने में आता है कि जो छात्र कक्षा में होशियार होते है शिक्षक उन छात्रों से ही ज्यादा लगाव रखते है तथा अन्य छात्रों की उपेक्षा करते है ऐसे में उपेक्षित छात्रों के मन में शिक्षक के प्रति हीनता की भावना आ जाती है और वे शिक्षक की बातों की अवहेलना करना शुरू कर देते है।

**बदलते गुरू शिष्य सम्बन्ध** :–वर्तमान में विद्यालयों में शिक्षक कक्षा शिक्षण के बजाय ट्युशन के कार्यो में ज्यादा व्यस्त रहता है उसे कोई मतलब नही कि कक्षा में छात्र उसकी बातों को सुने, समझे उसे तो कक्षा कक्ष में जाकर अपने कालांश की इतिश्री करनी होती है। वह छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान नही देता, नही उनके समाधान करने का प्रयत्न करता है ऐसे में छात्र भी शिक्षक का आदर सम्मान नही करते जिससे छात्र–अध्यापकों के मधुर संबंधों में दरार आने लगी है।

**पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अभाव** :–विद्यालयों में समुचित पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अभाव होने के कारण छात्र अपने खाली समय का सदुपयोग नही कर पाते जिससे वे खेल घंटी के समय निठल्ले बैठकर शरारतपूर्ण कार्य करते है।

**बढ़ती हुई छात्र संख्या** :– तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या शैक्षिक विस्तार एवं शैक्षिक सुविधाओं में कमी के कारण एक–एक कक्षा में कम से कम 60–60 विद्यार्थी अध्ययन करते है ऐसे में एक शिक्षक के द्वारा सभी छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना अत्यन्त कठीन कार्य है जिसके अभाव में छात्र असंतोष महसूस करते है।

**विद्यालय का वातावरण** :–वर्तमान में विद्यालयों में प्रायःदेखा जाता है कि अध्यापकों के मध्य सम्बन्ध मधुर नही होते है उनमें आपस में किसी बात को लेकर खींचतान चलती रहती है जिससे विद्यालय का वातावरण तनावपूर्ण बना रहता है। जिसका छात्रों पर गलत प्रभाव पड़ता है। वे न तो किसी अध्यापक का कहना मानते है और न ही सम्मान करते है।

**राजनीतिक पार्टियों का प्रभाव** :–देश में विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए छात्रों को मोहरा बनाती है। राजनीतिक पार्टियों का चुनाव में छात्र शक्ति का इस्तेमाल

करती है, छात्रों से नारे लगवाती है, छात्रों को दंगा करने के लिए उकसाती है, परस्पर झगडों में इनका इस्तेमाल किया जाता है इससे छात्रों में उसी प्रकार की आदत विकसित हो जाती है। और वे विद्यालयों में भी इस प्रकार के कार्य करने लगते है। बात बात में दंगे फसाद, हड़ताल, तोडफोड़ का सहारा लेते है। जिनका प्रत्यक्ष उदाहरण राजकीय महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में होने वाले चुनावों में देखा जा सकता है।उपर्युक्त कारणों के अलावा और भी कई कारण है जो छात्र असंतोष को जन्म देते है जैसे– समाज में व्याप्त अनुशासनहीनता, आर्थिक समस्या, नैतिक शिक्षा का अभाव, उचित निर्देशन का अभाव, अभिभावकों के द्वारा पर्याप्त ध्यान न देना, संकीर्ण दृष्टिकोण, आदि।

**अनुशासनहीनता को कम करने के सुझाव** :– वर्तमान में विद्यालयों, महाविद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता को कम करने हेतु निम्न उपाय किये जा सकते है–

1. **शिक्षा प्रणाली में सुधार** :– वर्तमान की मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करके छात्र अनुशासनहीनता को कम किया जा सकता है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो बालक के भविष्य में रोजी रोटी कमाने में सहायक हो। इस दृष्टि से राष्ट्रिय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षा तकनीकी एवं व्यावसायिक पक्ष का महत्व जानकर इसे स्थान दिया जा सकता है।
2. **परीक्षा प्रणाली में सुधार** :– परीक्षा में निबन्धात्मक प्रश्नों के साथ–2 वस्तुनिष्ठ एवं अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नों को भी शामिल करना चाहिए जिससे छात्र केवल पाँच प्रश्न पढ़ने के स्थान पर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अध्ययन करेगा जिससे उसको अनुशासनहीनता करने के लिए समय ही नही मिलेगा। अतः परीक्षा में सुधार हेतु अनवरत मूल्यांकन योजना अपनायी जानी चाहिए।
3. **शिक्षक का व्यवहार** :– शिक्षक कक्षा में केवल होशियार बच्चों की तरफ ही ध्यान न दे बल्कि सभी छात्रों के प्रति समान व्यवहार रखे तथा सभी छात्रों की समस्याओं का समाधान समान तरीकों से करें।

4. **पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन** :– विद्यालयों में समय समय पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आयोजन करते रहना चाहिए जैसे खेलकूद, नृत्य, हॉबी कक्षाएँ। ऐसी क्रियाओं से छात्रों एवं अध्यापकों में मधुर सम्बन्धों को बढ़ावा मिलता है।
5. **नैतिक शिक्षा** :– विद्यालय के पाठ्यक्रम में नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा को समाहित किया जाना चाहिए जिससे छात्रों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास हो सकेगा।
6. **सीमित प्रवेश** :– विद्यालयों में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों को प्रवेश देते समय विद्यालय में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। क्षमता से अधिक विद्यार्थियों का प्रवेश अनुशासनहीनता को बढ़ावा देता है।
7. **उचित निर्देशन** :– विद्यालयों में संस्था प्रधान द्वारा समय समय पर प्रार्थना स्थल पर या संगोष्ठि आयोजित करके छात्रों को उचित निर्देश देते रहना चाहिए एवं उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए।
8. **राजनैतिक पार्टियों से दूर रहना** :–विद्यालयों के किसी भी प्रोग्राम में राजनीति से संबंधी व्यक्ति को नही बुलाना चाहिए केबल शिक्षाविदो, समाज सुधारक, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को ही आमंत्रित करना चाहिए छात्रों को राजनीतिक पार्टियों से हमेशा दूर रखना चाहिए।
9. **संक्रमण मनोवृत्ति का परित्याग** :– अध्यापक व अभिभावकों को अपनी संकिर्ण मनोवृत्ति का परित्याग करके शिक्षण संस्थाओं में छात्र एवं छात्राओं को आपस में मिलने, बातचित करने आदि की पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इससे उनके दिमाग में किसी प्रकार का कोई तनाव नही रहेगा और वे अनैतिक कार्यो की ओर उन्मूख नही हो सकेगें।
10. **विकासात्मक कार्यो में छात्रों का सहयोग**:–विद्यालय में विभिन्न विकासात्मक कार्यो में छात्रों का भरपूर सहायोग लेना चाहिए इससे छात्र विद्यालय को अपना समझेगें और उसके अहित में किसी प्रकार को कोई कार्य नही करेंगे।

उपर्युक्त उपायों के अलावा भी अनुशासनहीनता की समस्या की प्रकृति और परिस्थिति के अनुसार दुसरे उपाय भी किये जा सकते है।

**निष्कर्ष** :– आज सम्पूर्ण समाज ही अनुशासनहीनता की समस्या से ग्रस्त है केवल छात्रों को ही दोष देना हमारी भूल है, छात्रों में फैली अनुशासनहीनता को सम्पूर्ण समाज में फैली अनुशासनहीनता का ही एक लघुरूप है जो हमे दिखाई देता है जबकि समाज के अन्य अंगों में फैली यह समस्या आग के अंगारों के समान है जो अन्दर ही अन्द जलाये जा रही है। अनुशासनहीनता की झलक आप सरकारी या गैर सरकारी कर्मचारियों में देखेंगे जिन्होने अपनी एक अजीब मनोवृत्ति बना रखी है उनकी इस मनोवृत्ति को हम घड़ी, कलैण्डर मनोवृत्ति कह सकते है। वे सारे दिन घड़ी की सूई को देखते रहते है कि कब पाँच बजे कब छूट्टी हो और कब वे घर पहुचे तथा कब कलैण्डर में पहली तारीख आये और कब उन्हे पैसे मिले बाकि काम कुछ नही करना यह अनुशासनहीनता का ही तो उदाहरण है। राजनीतिक राजनेताओं में फैली अनुशासनहीनता के बारे में आप रोज समाचार पत्रों में पढ़ते है टेलीविजन में देखते है विधानसभा, लोकसभा मे आये दिन होने वाले गाली गलोच, जूते चप्पल, लात घूसे, कुर्सी टेबल, हो हुल्लड आदि अनुशासनहीनता नही है तो और क्या है। आज जनता की मनोवृत्ति ऐसी हो गयी है जैसे स्वतंत्र देश में सभी लोग प्रत्येक नैतिक–अनैतिक कार्य करने के लिए स्वतंत्र हो गये हो। इन सब बातों को देखते हुए हम कह सकते है कि आज भारत का ही नही सम्पूर्ण विश्व का सम्पूर्ण समाज अनुशासनहीनता की समस्या से ग्रस्त है। केवल छात्रों में व्याप्त अनुशासनहीनता को ही दोष देना ठीक नही है। छात्रों में फैली अनुशासनहीनता समाज में फैली अनुशासनहीनता का ही एक लघुरूप है। अतः मेरा मानना है कि यदि हमे इस समस्या को जड़ से खत्म करना है तो देश के सम्पूर्ण नागरिक शिक्षण संस्थाएँ, कर्मचारीगण, राजनेता, अभिभावकगण एवं छात्र छात्राऐं सभी अपनी अपनी जिम्मेदारियों को समझे और पूर्ण इमानदारी से अपना–अपना काम करे तो कुछ दिनों बाद यह समस्या स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।